

हिन्दी साहित्य
GE-3
शास्त्री द्वितीय वर्ष, तृतीय सत्रार्थ
चतुर्थ प्रश्न-पत्र

लिखित परीक्षा- 60 अंक
आन्तरिक मूल्यांकन-40 अंक
पूर्णांक-100 अंक

प्रश्न-पत्र- रीतिकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं काव्य

कुल-4 क्रेडिट
2 क्रेडिट

खण्ड (क)

(1)

- रीतिकाल
- नामकरण
- सीमांकन
- परिस्थितियाँ
- रीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(2)

रीतिकाल के प्रमुख कवि- चिंतामणि, केशवदास, पद्माकर, मतिराम, भूषण, सेनापति, बिहारी, देव, वृन्द, घनानंद, आलाम, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव

- रीतिकाल की उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ

2 क्रेडिट

खण्ड (ख)

(3)

1. बिहारी

बिहारी रत्नाकर, सम्पादक: जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

1. मेरी भव बाधा हरी... हरित-दुति होइ॥
2. अजौं मर्याना ही रहौं...मुकुतन कै संग॥
3. कव कौं टेरेतु दीन रट....जगबाइ॥

7 जे. ए. ए. 2019

अर्चना दुर्ग

2019

4. मरनु भली बरु बिरह तं...दुहूँ दुख होइ॥
5. घर घर डोलत दीन है...बड़ी लखाइ॥
6. बड़े न हूँ गुननु भिनु...गद्यों न जाइ॥
7. नर की अरु नल-नीर की...तेतौ ऊँचा होइ॥
8. दुसह दुराज प्रजानु कौं...रवि चंदु॥
9. दृग उरझत दूटत कुटुम...नई यह रीति॥
10. इन दुखिया औँखियानु कौं...अनदेखै अकुलौँहि॥

2. घनानंद: कवित्त एवं सवैये

घनानंद ग्रंथावली, सम्पादक: विश्वनाथप्रसाद मिश्र

1. मोत सुजान अनीति करौ प्यासनि मारत मोही॥ छंद-7, पृ.-6
2. पोतम सुजान मेरे हित..... कौ घन बरसायहौ॥- छंद-24, पृ.-9-10
3. पहले अपनाय सुजान सनेह यौ विप छोरियै जू॥ छंद-38, पृ.-14
4. रावरे रूप की रीति अनूप.....रीझ के हाथनि हारियै॥ छंद-41, पृ.-15
5. जीवन हौ जिय की गति जानत जान..... हाय अनीति सु दीठि छिपेये॥ छंद-189, पृ.-61

(4)

3. भूषण

भूषण ग्रंथावली- सम्पादक: आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र,
'शिवभूषण'- (39,45,48,50,59)

1. तो सम हो सेस सो तो बसत..... बातें चित चुनिवै (39)
2. यौ सिवराज कौ राज.... न कछु है। (45)
3. तेरौ तेज सरजा समथ्य दिनकर तेरे कर सौ। (48)
4. इंद्र जिम जंभ पर वाड़व ज्यौ अंभ पर सेर सिवराज है। (50)
5. सिंहथरी जाने विन जावली-जंगल भटी हठी..... आँकुसको सटक्यौ। (59)

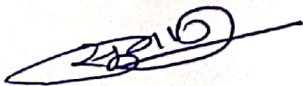
4. वृन्द

हिन्दी काव्य गंगा (प्रथम भाग) सम्पादक: सुधाकर पाण्डेय

1. जाहीं ते कछु कैसे बुझत पियास छंद सं. (3)
2. कैसे निबहै निबल.....मगर सों बैर (5)
3. अपनी पहुँच विचारि जेती लंबी सौर (7)
4. विद्या धन उद्यम विना..... पंखा की पौन (8)

8

अर्चना देव

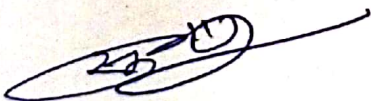


5. ओछे नर की घटत घट जाया।(9)
6. नयना देत बताय..... चुरी कहि देत (15)
7. दुष्ट न छाँड़ै दुष्टता होत न सेत (22)
8. जैसे बंधन प्रेम को..... न निकरै भौर (24)
9. जुवा खेले होतु है..... पाँडव किय बनवास (39)
10. सरस्वती के भंडार को बिन खरचे घटिजात (40)

सहायक ग्रंथ-

1. विहारी रत्नाकर- सम्पादक: जगन्नाथ दास रत्नाकर।
2. घनानंद ग्रन्थावली- सम्पादक: आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र संस्करण-2009 वि.
3. भूषण ग्रंथावली- सम्पादक: आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाश, नयी दिल्ली, संस्करण-2012
4. हिन्दी काव्य गंगा (प्रथम भाग)- सम्पादक: सुधाकर पाण्डेय, नागरी पचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1990
5. रीतिकव्य की भूमिका- डॉ. नगेन्द्र।

अर्चना डूबे



9 